।। श्रीरुद्राष्टकम् ।।

॥ गुरू वन्दना ॥

गुरूर्ब्रह्मा गुरूविष्णु गुरूर्देवो महेश्वरः ॥
गुरूः साक्षात्परब्रह्म तस्मैं श्री गुरुवे नमः॥

❁

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,
लम्बोदराय शकलाय जगद्धिताय ॥
नागाननाय श्रुति यज्ञ बिभूषिताय,
गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

कर्पूर गौरं करूणावतारं,
संसारसारम भुजगेन्द्र हारम् ॥
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे,
भवं भवानि सहितं नमामि ॥

।। श्रीरुद्राष्टकम् ।।

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं,
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं,
चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहम् ॥१॥

हे मोक्षस्वरूप, विभु, व्यापक, ब्रह्म और वेदस्वरूप, ईशान दिशा के ईश्वर तथा सबके स्वामी श्रीशिवजी, मैं आपको नमस्कार करता हूँ। निजस्वरूप में स्थित (अर्थात् मायादिरहित), [मायिक] गुणों से रहित, भेदरहित, इच्छारहित, चेतन आकाशरूप एवम् आकाश को ही वस्त्ररूप में धारण करने वाले हे भगवान् शिव, आपको मैं भजता हूँ।

निराकारमोंकारमूलं तुरीयं,
गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं ।
करालं महाकाल कालं कृपालं,
गुणागार संसारपारं नतोऽहम ॥२॥

निराकार,ओंकार के मूल,तुरीय (तीनों गुणों से अतीत) वाणी, ज्ञान और इन्द्रियों से परे कैलासपति, विकराल, महाकाल के भी काल, कृपालु, गुणों के धाम, संसार से परे, आप परमेश्वर को मैं नमस्कार करता हूँ ।

तुषाराद्रि संकाशगौरं गभीरं,
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारू गंगा,
लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा ॥३॥

जो हिमाचल के समान गौरवर्ण तथा गम्भीर हैं, जिनके शरीर में करोड़ों कामदेवों की ज्योति एवं शोभा है, जिनके सिर पर सुन्दर नदी गंगा जी विराजमान हैं, जिनके ललाट पर द्वितीया का चन्द्रमा और गले में सर्प सुशोभित है ।

चलत्कुंडल भ्रू सुनेत्रं विशालं,
प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं ।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं,
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि ॥४॥

जिनके कानों में कुण्डल हिल रहे हैं, सुन्दर भ्रुकुटी और विशाल नेत्र हैं, जो प्रसन्नमुख, नीलकण्ठ और दयालु है, सिंह चर्म का वस्त्र धारण किये और मुण्डमाला पहने हैं, उन सब के प्रिय और सब के नाथ (कल्याण करने वाले) भगवान् शंकर को मैं भजता हूँ ।

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं,
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं,
भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यम् ॥५॥

प्रचण्ड (रूद्ररूप), श्रेष्ठ, तेजस्वी, परमेश्वर, अखण्ड, अजन्मा, करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाशवाले, तीनों प्रकार के शूलों (दुखों) को निर्मूल करने वाले, हाथ में त्रिशूल धारण किये, भाव (प्रेम) के द्वारा प्राप्त होने वाले भवानी के पति भगवान् शंकर को मैं भजता हूँ ।

कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी,
सदा सज्जनानन्ददाता त्रिपुरारी ।
चिदानंद संदोह मोहापहारी,
प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी ॥६॥

कलाओं से परे , कल्याणस्वरूप, कल्प का अन्त (प्रलय) करने वाले, सज्जनों को सदा आनन्द देने वाले, त्रिपुर के शत्रु सच्चिदानन्दघन, मोह को हरने वाले मन को मथ डालने वाले, कामदेव के शत्रु हे प्रभो, प्रसन्न होइए, प्रसन्न होइए ।

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं,
भजंतीह लोके परे वा नराणां ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं,
प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम ॥७॥

जब तक, पार्वती के पति, आपके चरणकमलों को मनुष्य नहीं भजते, तब तक उन्हें न तो इहलोक और न परलोक में सुख-शान्ति मिलती है और न उनके तापों का नाश होता है। अतः हे समस्त जीवों के अंदर हृदय में निवास करने वाले प्रभो, प्रसन्न होइए।

न जानामि योगं जपं नैव पूजां,
नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं ।
जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं,
प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो ॥८॥

मैं न तो योग जानता हूँ, न जप और न पूजा ही । हे शम्भो, मैं तो सदा-सर्वदा आपको ही नमन करता हूँ । हे प्रभो, बुढ़ापा तथा जन्म (मृत्यु) के दुःखसमूहों से जलते हुए मुझ दुःखी की दुःख से रक्षा कीजिए । हे ईश्वर, हे शम्भो, मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं

विप्रेण हरतोषये ।

ये पठन्ति नरा भक्त्या

तेषां शम्भुः प्रसीदति ॥९॥

भगवान रूद्र की स्तुति का यह अष्टक उन शंकरजी की तुष्टि (प्रसन्नता) के लिए ब्राह्मण द्वारा कहा गया । जो मनुष्य इसे भक्ति पूर्वक पढ़ते हैं, उन पर भगवान् शम्भु प्रसन्न होते हैं।

॥ इति श्रीरूद्राष्टकं सम्पूर्णम ॥

॥ आरती ॥

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा ।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धंगी धारा ॥१॥
॥ ॐ हर हर महादेव ॥

एकानन चतुरानन पंचानन राजै,
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजै ॥२॥
॥ ॐ हर हर महादेव ॥

दोभुज चारूचतुर्भुज दशभुज अति सोहै, ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवनजन मोहै ॥३॥
॥ ॐ हर हर महादेव ॥

अक्षमाला वनमाला रूण्डमाला धारी॥
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी ॥४॥
॥ ॐ हर हर महादेव ॥

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे,

सनकादिक गरूड़ादिक भूतादिक संगे ॥५॥

॥ ॐ हर हर महादेव ॥

कर मध्ये सुकमण्डलु चक्र शूलधारी ।

सुखकारी दुःखहारी जग-पालनकारी ॥६॥

॥ ॐ हर हर महादेव ॥

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।

प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ॥७॥

॥ ॐ हर हर महादेव ॥

त्रिगुणस्वामि की आरती जो कोई नर गावै ।

कहत शिवानन्दस्वामी मनवांछित पावै ॥८॥

॥ॐ हर हर महादेव ॥

॥ इति आरती सम्पूर्ण ॥

॥ द्वादशज्योर्तिलिंगानि ॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं चं, श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालं, ओंकारममलेश्वरम् ॥
परल्यां वैद्यनाथ च, डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं, नागेशं दारूकावने ॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं, त्र्यम्बकं गौतमीतटे ।
हिमालये तु केदारं, घुष्मेशं च शिवालये ॥
एतानि ज्योर्तिलिंगानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्त जन्म कृतं पापं, स्मरणेने विनश्यति ॥

॥ इति द्वादशज्योर्तिलिंगानि सम्पूर्णम् ॥

श्री महाकालेवर ज्योर्तिलिंग उज्जैन